

जैन-धर्म में विश्व शान्ति की आशा किरण

डॉ० सन्तोष कुमार पाण्डेय*

मनुष्य एक धर्मशील प्राणी है। धर्म ही मनुष्य को सच्चे राह पर चलने की शिक्षा देती है। इस भू-धरा पर अनेक धर्मोंको मानने वाले लोग रहते हैं। इन धर्मों में हिन्दू-धर्म, इस्लाम धर्म, ईसाई-धर्म, पारसी-धर्म, जैन-धर्म, बौद्ध-धर्म प्रमुख हैं। जैन-धर्म विश्व में शान्ति स्थापित करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका प्रस्तुत कर सकता है।

'जैन' शब्द 'जिन' से बना है। जिन शब्द 'जि' धातु से 'नक्' प्रत्यय लगाकर व्युत्पन्न होता है। जिसका अर्थ 'विजय' है। अर्थात् रागद्वेषादि मनोविकारों का दमन कर विजय प्राप्त करने वाला 'जिन' कहलाता है।

रागद्वेषादि मनोविकाराःजयतीति जैनः

ऐसा माना जाता है कि इस नश्वर संसार में सर्वत्र दुःख ही दुःख व्याप्त है। मनुष्य के कायिक-वाचिक मानसिक कष्टों को दूर करना ही सभी धर्मों का मुख्य उद्देश्य है। इन दुःखों को कैसे दूर किया जाय ? इनको दूर करने का उपाय या मार्ग क्या है ? इन तत्त्वों के अन्वेषण में अनेक ऋषियों, महात्माओं, सन्यासियों ने अपना सम्पूर्ण जीवन लगा दिया। इनके कार्यों उपदेशों और सिद्धान्तों ने अनेक धर्मों एवं संस्कृतियों को जन्म दिया। इन संस्कृतियों में श्रमण-संस्कृतियों का महत्वपूर्ण स्थान है। इन संस्कृतियों ने मानवता का बहुत ही कल्याण किया है। जैन एवं बौद्ध संस्कृतियों को श्रमण-संस्कृति के नाम से जाना जाता है।¹ इनके सिद्धान्त आज भी प्रासंगिक है।

इन श्रमण-धाराओं का परम लक्ष्य मानव को पुरुषार्थी बनाते हुए इस भू-धरा पर मानवता को स्थापित करना रहा है। ये श्रमण-संस्कृतियाँ निवृत्ति-प्रधान होते हुए भी लोकोपयोगी, कल्याणकारक एवं व्यवहारपरक हैं। ये विश्व मानव को अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य एवं अपरिग्रह के सिद्धान्त पर चलने की शिक्षा देती हैं।²

इक्कसवीं शदी मानव के वैज्ञानिक प्रगति का युग है। आज मानव प्रगति के उच्चतम शिखर पर है। विज्ञान के द्वारा मानव ने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में विलक्षण प्रगति किया है। इसके साथ ही जीवन के दूसरे पक्ष पर दृष्टि डालें तो देखते हैं कि इस वैज्ञानिक युग में मनुष्य की सबसे अधिक क्षति नैतिकता और

चरित्र को लेकर हुयी है। जिससे मानवता का अपूरणीय हास हुआ है। इसी कारण से विश्व में असुरक्षा का भाव, अराजकता, द्वेष, हिंसा, अनैतिकता, बलात्कार, धन-संग्रह की प्रवृत्ति, अहंकार, चोरी, बेईमानी और विश्व में सर्वत्र आतंकवाद बढ़ा है। इन बुराईयों से कैसे विश्व मानवता का बचाया जाय ? इनके निरोध का उपाय क्या है ? विश्व समुदाय धर्म के किस मार्ग (सिद्धान्त) पर चलकर विश्व में मानवता के उच्चतम आदर्श को प्रस्तुत कर सके। यह एक यक्ष प्रश्न है।

उपर्युक्त प्रश्न का उत्तर जैन-धर्म के पंचमहाव्रतों में निहित है। बस आवश्यकता है आज इसको आत्मसात करने की। इन पंचमहाव्रतों का पालन करके व्यक्ति अपनी बुराईयों का नाश कर विश्व में मानवता और नैतिकता स्थापित कर सकता है। ये पंचमहाव्रत हैं³

1-अहिंसा

2-सत्य

3-अस्तेय

4-ब्रह्मचर्य

5-अपरिग्रह

उपर्युक्त पंचमहाव्रतों का पालन करना जैन-धर्म में सम्यक्-आचरण के लिए आवश्यक बतलाया गया है।⁴ इससे ही जीव-बन्धन से मुक्त होता है। जैन-दर्शन के त्रिरत्नों में सम्यक् आचरण का विशेष महत्व है। अन्य दो रत्न हैं-सम्यक्-दर्शन एवं सम्यक्-ज्ञान।

पंचमहाव्रतों का परिचय इस प्रकार है-

अहिंसा-अहिंसा का अर्थ है-हिंसा का सर्वथा परित्याग। हमारे देश के मनीषियों ने सदैव से ही अहिंसा को अत्यधिक महत्व दिया है। अहिंसा को ही परम धर्म माना जाता है।

अहिंसा परमोधर्मः⁵

सभी धर्मों में अहिंसा का श्रेष्ठ आचरण स्वीकार किया गया है। जैन-धर्म में अहिंसा का क्षेत्र व्यापक है।⁶ जैन-धर्म ने मन, वचन और शरीर तीनों से हिंसा के परित्याग को अहिंसा माना है। अपने मन में किसी प्राणी के वध का अथवा कष्ट पहुँचाने का मात्र विचार उत्पन्न होने को जैन-धर्म हिंसा मानता है।⁷ अहिंसा शब्द हिंसा का निषेधात्मक रूप है। अहिंसा सत्यानुभूति का परिणाम एवं **स्वबोध की भावना है।**

वर्तमान समय में हिंसा ने अपना घोर घृणित रूप धारण कर लिया है। विश्व में यत्र तत्र सर्वत्र हिंसा का घृणित कुकृत्य देखा जा सकता है। मनुष्य अनायास ही निरीह जीवों का वध कर रहा है। धन के लिए एक मनुष्य दूसरे मनुष्य का वध कर रहा है। सर्वत्र सम्पूर्ण विश्व में आतंकवाद का आतंक फैल रहा है।

निर्दोष बहु-बेटियाँ दहेज के कारण घरेलू हिंसा का शिकार बनायी जा रही हैं। शासन-सरकार का अत्यधिक धन हिंसा रोकने पर व्यय हो रहा है।

आज यदि मनुष्य जैन-धर्म प्रतिपादित अहिंसा के मार्ग को जीवन में आत्मसात् कर ले तो समाज की अनेक बुराई स्वमेव ही शान्त हो जायेगी और विश्व में शान्ति स्थापित करने का मार्ग प्रशस्त होगा, जो वर्तमान समय की एक भूमण्डलीय आवश्यकता है। अहिंसा से ही "वसुधैव कुटुम्बकम्" के स्वप्न को साकार किया जा सकता है।

सत्य—असत्य का त्याग और सत्य का पालन एक आवश्यक व्रत है। जिसके पालन करने का निर्देश जैन-धर्म में दिया गया है। सत्य के पालन के लिए पाँच भावनाओं का निर्देश यहाँ किया गया है।⁸ अनुमतिभाषण अर्थात् सत्य का पालन करते समय अपने वचनों में औचित्य रखने का प्रयास करना।

क्रोध—विषयक प्रसंग में सत्य के द्वारा क्रोध को बढ़ाने की अपेक्षा मौन रहना। क्रोध न करना है।

लोभ-हास—परिहास के अवसर पर भी अप्रिय सत्य नहीं बोलना चाहिए। जैन-धर्म में जो वस्तु जिस रूप में विद्यमान है। उसे उसी रूप में कहना ही सत्य है।⁹

सत्यपालन की आवश्यकता वर्तमान युग की महती आवश्यकता है। अपने स्वार्थ के वशीभूत होकर लोग सत्य को नहीं कहते। जिससे समाज और व्यक्ति के अन्दर अनेक भ्रान्तियाँ जन्म ले लेती हैं। अतः इस महाव्रत के पालन की भी आज आवश्यकता है।

अस्तेय—मनसा—वाचा—कर्मणा चौर्यवृत्ति का वर्णन न करना अस्तेय कहलाता है। इस व्रत का पालन करने के लिए जैनधर्म में निर्देश है कि बिना अनुमति के किसी स्थान में किसी भी वस्तु को ग्रहण नहीं करना चाहिए।¹⁰ आवश्यकता से अधिक किसी भी वस्तु को ग्रहण नहीं करना चाहिए।¹¹

वर्तमान समय में नैतिकता के पतन के कारण व्यक्ति के अन्दर अधिक धन संग्रह करने की प्रवृत्ति को बढ़ावा मिला है। जिससे चोरी—डकैती, लूट, हत्या, रंगदारी, अपहरण जैसी घटनायें बढ़ी हैं। जिससे समाज में असुरक्षा और आतंक का माहौल सर्वत्र व्याप्त हो गया है। अस्तेय व्रत के पालन से ही विश्व में सुरक्षा एवं शान्ति का मार्ग प्रशस्त हो सकता है।

ब्रह्मचर्य—ब्रह्मचर्य व्रत का पालन भारतीय संस्कृति का मूल तत्त्व है। ब्रह्मचर्य शब्द का अर्थ है—“मनुष्य द्वारा ब्रह्म की खोज में अपना जीवन लगाये रखना।” महावीर स्वामी ने पाँचवाँ व्रत ब्रह्मचर्य को ही माना है।¹² ब्रह्मचर्य व्रत के पालन का उद्देश्य सत्य, तप, प्राणिमात्र के प्रतिदया और इन्द्रिय निग्रह का अनुष्ठान है।¹³

अपने चरित्र और वंश को दूषित होने से बचाने के लिए ब्रह्मचर्य—व्रत का पालन अति आवश्यक है। इस व्रत के पालन से चारित्रिक दोषों को दूर किया जा सकता है और अपने जवीन को सुखमय बनाया जा सकता है।

अपरिग्रह—अपरिग्रह का अर्थ है—संचय न करना। वस्तुतः इस व्रत के द्वारा मनुष्य की लोभवृत्ति को संयमित करने का प्रयास किया गया है। इसी से काम, क्रोध, लोभ, मोह तथा पाप का उदय होता है और तृष्णा की वृद्धि होती है। इसलिए संचय वृत्ति का सर्वथा परित्याग करना चाहिए। मन में संग्रह का विचार नहीं करना चाहिए। वाणी से किसी को संग्रह के लिए प्रेरित नहीं करना और अपने कर्मों से संग्रह का परित्याग अपरिग्रह व्रत का पालन है। इस व्रत के पालन से व्यक्ति अपने कर्तव्यों का पालन और वासनाओं पर विजय पा सकता है।

अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि—दुःख निरोध एवं राष्ट्रेषादि सांसारिक वासनाओं के परित्याग के लिए किया जाने वाला आचरण ही पंचमहाव्रत है। इसी पंचमहाव्रतों ने जैन-धर्म को आज भी प्रासंगिक बनाये रखा है। जैन-धर्म में सम्यक आचरण को सदाचार भी कहते हैं। व्यक्ति सम्यक आचरण से ही अपने को कुमार्ग से सुमार्ग पर लगा सकता है। धर्म एवं दर्शन का परम् उद्देश्य भी यही होता है। वर्तमान समय में विश्व में अनेक समस्याओं ने जन्म ले लिया है। मानव पग-पग पर विनाश को आमंत्रित करते दिख रहा है। इस घोर महाविनाश के अन्धकार में जैन-धर्म विश्व शान्ति में आशा की किरण—सा दिखाई दे रहा है। यह किरण पंचमहाव्रतों के रूप में जैन-धर्म में विद्यमान है। अस्तु—

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. भारतीय दर्शन डॉ० जगदीश चन्द्र मिश्र पृष्ठ 23
2. भारतीय दर्शन आ० बलदेव उपाध्याय पृष्ठ 116
3. भारतीय दर्शन एवं संस्कृति डॉ० महाराजदीन पाण्डेय एवं डॉ० आराधना वहीं पृष्ठ 97
4. महाभारत अनुशासन पर्व पृष्ठ 116—35
5. भारतीय दर्शन एवं संस्कृति डॉ० महाराजदीन पाण्डेय एवं डॉ० आराधना सर्वार्थसिद्धि सूत्र पृष्ठ 7—13
6. भारतीय दर्शन एवं संस्कृति डॉ० महाराजदीन पाण्डेय एवं डॉ० आराधना भारतीय दर्शन डॉ० जगदीश चन्द्र मिश्र पृष्ठ 236
7. भारतीय दर्शन आ० बलदेव उपाध्याय पृष्ठ 116
8. भारतीय दर्शन डॉ० जगदीश चन्द्र मिश्र पृष्ठ 237
9. तत्त्वार्थ सूत्राधिभाग्य पृष्ठ 9—6
10. सूत्रकृतांगसूत्र शीलांककृत टीका

